

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 6, 2 कुरिन्थियों 5, मसीह के राजदूत

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 6, 2 कुरिन्थियों 5, मसीह के राजदूत हैं।

हम 2 कुरिन्थियों के अध्याय 5 को देख रहे हैं, और जैसा कि हम फिर से शुरू करते हैं, हम कुछ बुनियादी सवाल पूछना चाहते हैं क्योंकि ये सवाल हमें अध्यायों के बारे में सोचने में मदद करते हैं क्योंकि हम उन्हें थोड़ा-थोड़ा करके और ध्यान से देखते हैं।

हम जो करते हैं, वह क्यों करते हैं? दूसरे शब्दों में, हम जो करते हैं, उसके पीछे हमारी प्रेरणा क्या है? ये प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हैं; वे आज के मंत्रालय के लिए बहुत प्रासंगिक और प्रासंगिक हैं। सिर्फ सही काम करना ही काफी नहीं है। हमें सही कारणों से सही काम करना चाहिए।

पॉल ने कई परेशानियों का सामना किया, फिर भी वह उस सेवा को करने में अथक रहा जिसके लिए उसे बुलाया गया था। उसका जोश कभी कम नहीं हुआ। वह बस आगे बढ़ता रहा। मुख्य बात है प्रेरणा।

सही इरादों के अर्थ में प्रेरणा। जब हम अध्याय 4, बल्कि अध्याय 5 पर आते हैं, तो पौलुस अध्याय 4, श्लोक 17 से 18 में दिए गए निष्कर्ष पर आगे बढ़ता है, और वह सेवकाई के लिए अपनी प्रेरणा के बारे में और अधिक विवरण प्रदान करता है। पौलुस, बिना किसी संदेह के, एक ऐसे भावी जीवन के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त था जो दुख और पीड़ा से रहित है।

यह बिना किसी बदलाव के जीवन है, एक ऐसा जीवन जहाँ मृत्यु ने अपनी शक्ति खो दी है। इसलिए, उसके पास स्वर्ग से पुनरुत्थान की भरपूर आशा थी। इतना ही नहीं, पौलुस भविष्य के ईश्वरीय न्याय के बारे में निश्चित था, जिसके बारे में आज हम बात करना पसंद नहीं करते या सुनना नहीं चाहते।

हम इसे आयत 9 से 10 में देखते हैं। इसलिए, आने वाले न्याय के सामने, उसके पास अविश्वसनीय आत्मविश्वास था। क्योंकि परमेश्वर के साथ उसका रिश्ता सही था।

तीसरा, पौलुस को यकीन था कि मानवता का परमेश्वर के साथ मेलमिलाप परमेश्वर की पहल थी, जो प्रेम से प्रेरित थी और मसीह यीशु में प्रकट हुई और उसके द्वारा प्रभावित हुई। इसलिए, जब हम अध्याय 5 पर आते हैं, तो हम मसीह के राजदूतों को देख रहे होते हैं। 2 कुरिन्थियों में किसी भी अनुच्छेद ने शायद अध्याय 5 से अधिक चर्चा को प्रेरित नहीं किया है। इसलिए, विद्वानों की व्याख्याओं में विविधता है, लेकिन कुछ बातें बहुत स्पष्ट हैं।

यहाँ पौलुस जो कहता है वह सीधे अध्याय 4 के उस भाग से संबंधित है, जहाँ पौलुस ने बताया कि दुःख, व्याकुलता और उत्पीड़न के बीच भी, ईश्वरीय सात्वना के माध्यम से, ईश्वरीय सात्वना के माध्यम से महिमा की आशा थी। इसलिए, दूसरे शब्दों में, नश्वरता और मृत्यु के विनाश की उपस्थिति में भी, ईश्वरीय हस्तक्षेप के माध्यम से, जीवन का संचालन था। यही हमने अध्याय 4 , श्लोक 10 से 12 में देखा।

इसलिए, मृत्यु के बीच जीवन, पीड़ा के बाद महिमा का यह दोहरा विषय, वही है जो पौलुस अध्याय 5, श्लोक 1 से 10 में जारी रखता है। पौलुस अब स्पष्ट रूप से उन ईश्वरीय सात्वना के स्रोतों को निर्दिष्ट करता है जो उस विश्वासी को प्रदान की जाती हैं जो आसन्न मृत्यु की संभावना का सामना करता है। मूल रूप से, जो हम देखते हैं वह नंबर एक है, एक आध्यात्मिक शरीर के भविष्य के कब्जे की निश्चितता।

नंबर दो, आत्मा का वर्तमान अधिकार परम परिवर्तन की प्रतिज्ञा के रूप में। और, बेशक, हम नंबर तीन में देखते हैं कि मृत्यु जो ज्ञान लाती है वह दृष्टि के क्षेत्र में चलना शुरू करती है और मसीह की तत्काल उपस्थिति में प्रस्थान को शामिल करती है। मैं अध्याय 5 से पढ़ना चाहता हूँ, क्योंकि हम जानते हैं कि अगर हमारा सांसारिक तम्बू, अगर वह सांसारिक तम्बू जिसमें हम रहते हैं, नष्ट हो जाता है, तो हमारे पास ईश्वर की ओर से एक इमारत है, एक घर जो हाथों से नहीं बनाया गया है, स्वर्ग में शाश्वत है।

क्योंकि इस तम्बू में हम कराहते हैं, और अपने स्वर्गीय निवास को पहनने की लालसा करते हैं। यदि वास्तव में, जब हम इसे उतार देंगे, तो हम नंगे नहीं पाए जाएंगे। क्योंकि जब तक हम इस तम्बू में हैं, हम अपने बोझ के नीचे कराहते हैं क्योंकि हम कपड़े उतारना नहीं चाहते हैं, बल्कि और अधिक पहनना चाहते हैं ताकि जो नश्वर है वह जीवन में समा जाए।

जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है, वह परमेश्वर है, जिस ने हमें आत्मा भी बयाने के तौर पर दी है। इसलिए हम हमेशा भरोसा रखते हैं, हालाँकि हम जानते हैं कि जब हम शरीर में रहते हैं, तो प्रभु से दूर रहते हैं, क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, बल्कि विश्वास से चलते हैं।

हाँ, हमें भरोसा है, और हम शरीर से दूर होकर प्रभु के साथ घर पर रहना पसंद करेंगे। इसलिए, चाहे हम घर पर हों या बाहर, हमारा लक्ष्य उसे प्रसन्न करना है। हम सभी को मसीह की न्यायपीठ के सामने उपस्थित होना चाहिए ताकि प्रत्येक को शरीर में किए गए अच्छे या बुरे कामों का प्रतिफल मिले।

आयत 1 से 10 मूल रूप से मृत्यु के सामने पौलुस के आत्मविश्वास को दर्शाते हैं। इसलिए, पौलुस आत्मविश्वास के साथ शुरू करता है। हम जानते हैं।

हम जानते हैं कि अगर हम जिस सांसारिक तम्बू में रहते हैं, उसे नष्ट कर दिया जाता है, तो इसका मतलब है कि कुरिन्थियों ने पॉल की बात को स्वीकार किया है। हम जानते हैं, लेकिन यह उससे कहीं ज़्यादा है। यह पॉल के दृढ़ विश्वास और दृढ़ विश्वास को दर्शाता है कि ईसाई अंततः अपने वर्तमान अनुभव की कमज़ोरी और पीड़ा से मुक्त हो जाएगा।

अब सुनिए, पौलुस कहता है कि हम जानते हैं। वह यह नहीं कहता कि हम सोचते हैं। वह यह नहीं कहता कि हम आशा करते हैं।

वह यह नहीं कहता कि हम अनुमान लगाते हैं, बल्कि वह कहता है कि हम जानते हैं। यह कितना साहसिक कथन है। आप देखिए, जैसा कि पौलुस ने पहले अध्याय 4, आयत 1 से 15 में कहा है, विश्वासी पुनरुत्थान की आशा के कारण इस जीवन में किसी भी परीक्षा का सामना कर सकते हैं।

इसलिए, यहाँ पौलुस जो कहता है वह सीधे तौर पर उससे संबंधित है जो हम अध्याय 4 में पढ़ते हैं, और जाहिर है, ऐसा लगता है कि अपने प्रेरितिक जीवन में पहली बार, पौलुस मसीह की वापसी से पहले अपनी मृत्यु की संभावना, अब एक संभावना, के साथ गंभीरता से विचार करना शुरू करता है। अब अगर हम 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 4 पद 15 और पद 17, और 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 पद 51 से न्याय करते हैं, तो ऐसा लगता है कि पौलुस को उम्मीद थी कि मसीह के लौटने पर वह उन मसीहियों में से एक होगा। लेकिन अब, एशिया में मृत्यु के साथ अपने हाल के विनाशकारी मुठभेड़ के परिणामस्वरूप, जिसे हम अध्याय 1, पद 8 से 11 में पढ़ते हैं, उसे एहसास हुआ कि वह पारुसिया, यानी मसीह के आने या प्रकट होने से पहले मरने की संभावना थी।

हालाँकि वह हमेशा बचने की उम्मीद रखता था, लेकिन वह हमेशा इंतज़ार करता रहता था। और अगर मैं बस इतना कहूँ, तो आप जानते हैं, आप समझते हैं कि जब आपके पास ऐसी कोई उम्मीद होती है, तो यह आपके जीने के तरीके को प्रभावित करती है। जब हम उस उम्मीद की ओर देखते हैं, तो सब कुछ बदल जाता है।

और इसलिए, पॉल इसके बारे में सोचना शुरू करता है। वह कहता है, हम सांसारिक तम्बू में जानते हैं। अब, याद रखें कि पॉल एक चमड़े का वॉकर था।

पॉल एक चमड़े का काम करने वाला व्यक्ति था, जिसके काम में तम्बू बनाना भी शामिल था। इसलिए, पॉल ने स्वाभाविक रूप से अपने वर्तमान शरीर की तुलना एक सांसारिक तम्बू से की। इसलिए, वह उस कल्पना को अपने पेशे से, अपने काम से लाया।

उन्होंने वर्तमान शरीर की तुलना एक सांसारिक तम्बू से की जिसे किसी भी क्षण ध्वस्त या नष्ट किया जा सकता है। यह केवल उनके शरीर में पहले से ही काम कर रही कमज़ोरी और क्षय की प्रक्रिया के समापन को चिह्नित करेगा। लेकिन, और यह एक बड़ा लेकिन है, सांसारिक तम्बू के ध्वस्त होने की इस संभावना ने उन्हें बिल्कुल भी नहीं डराया।

क्यों? क्योंकि उसे भरोसा था, वह एक स्थायी स्वर्गीय घर का एक सुनिश्चित प्राप्तकर्ता था। इस एक, पद दो को देखें, क्योंकि इस तम्बू में, हम कराहते हैं, अपने स्वर्गीय निवास के करीब होने की लालसा करते हैं। उस अंश में अभी और अभी तक को देखें।

अब हम एक तंबू में रहते हैं। अभी तक हम एक इमारत में रहते हैं। तंबू और इमारत की तुलना।

इतना ही नहीं, एक सांसारिक है, दूसरा शाश्वत है। एक स्वर्गीय है, बल्कि स्थायित्व के मामले में, एक तम्बू है, और दूसरा इमारत है।

पर्यावरण के संदर्भ में, एक सांसारिक है, और दूसरा स्वर्गीय है। इसे देखें, तो एक नाशवान है, एक शाश्वत है। इसकी संरचना, इसकी दृढ़ता के संदर्भ में, यह कहता है, इस तम्बू में, हम कराहते हैं, अपने स्वर्गीय निवास के करीब होने की लालसा करते हैं।

एक इंसान द्वारा बनाया गया है और दूसरा भगवान द्वारा बनाया गया है। दोनों में बहुत-बहुत अंतर है।

यह वर्तमान मानव शरीर की तुलना एक तह किए जा सकने वाले तम्बू से करता है जिसे एक इमारत से बदला जाना है, जो कि पुनरुत्थान वाले शरीर का स्पष्ट संकेत है जिसका उल्लेख पॉल ने पहले 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 में किया था। मेरा मतलब है, वह महान पुनरुत्थान अध्याय, अगर हम इसे बहुत संक्षेप में देखें, 1 कुरिन्थियों अध्याय 15, श्लोक 38, यह समझने के लिए कि पॉल यहाँ क्या कह रहा है, आइए हम पुनरुत्थान के बारे में पहले जो कहा था, उसका हवाला दें। यह अंश बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर हमारे पास 2 कुरिन्थियों का अध्याय पाँच नहीं है, तो हम इस बारे में कम जानते हैं कि जब कोई व्यक्ति मरता है तो क्या होता है।

मेरा मतलब है, 1 कुरिन्थियों 15 के अलावा, यह एकमात्र ऐसा मार्ग है जो हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि विश्वासी के मरने के बाद क्या होता है। 1 थिस्सलुनीकियों में हमें केवल उद्धारकर्ता के साथ चले जाने के बारे में बताया गया है। 1 कुरिन्थियों अध्याय 15, वहाँ कुछ आयतों को देखते हुए, सबसे पहले आयत 38 से शुरू करें।

श्लोक 38 में, परमेश्वर उसे एक शरीर देता है जैसा कि उसने प्रत्येक प्रकार के शरीर के लिए चुना है। श्लोक 40 में, आकाशीय पिंड और स्थलीय पिंड हैं, लेकिन आकाशीय की महिमा एक है और स्थलीय की महिमा एक है। आकाशीय का अर्थ है स्वर्गीय, और स्थलीय का अर्थ है सांसारिक।

तो, आप कह सकते हैं कि स्वर्ग की महिमा एक है, और सांसारिक की महिमा दूसरी है। श्लोक 42, ऐसा ही मृतकों के पुनरुत्थान के साथ है, जो बोया जाता है वह नाशवान है, जो जी उठता है वह अविनाशी है। श्लोक 44 में, इसे एक भौतिक शरीर के रूप में बोया जाता है, लेकिन एक आध्यात्मिक शरीर के रूप में जी उठता है।

अगर भौतिक शरीर है, तो आध्यात्मिक शरीर भी है। फिर, श्लोक 46 कहता है, यहाँ, लेकिन यह आध्यात्मिक नहीं है, जो झूठा है, बल्कि भौतिक है, और फिर आध्यात्मिक है। श्लोक 48, जैसा कि धूल का आदमी था, वैसे ही वे लोग हैं जिनके पास धूल है।

और जैसा स्वर्ग का मनुष्य है, वैसे ही स्वर्ग के लोग भी हैं। इसलिए, पौलुस सांसारिक लोगों की तुलना और तुलना करना जारी रखता है और फिर पद 52 से शुरू करते हुए, पद 52 से शुरू करते हुए, वह कहता है, एक पल में, पलक झपकते ही, आखिरी तुरही बजने पर, क्योंकि तुरही बजेगी और मुर्दे अविनाशी रूप में जी उठेंगे और हम बदल जाएँगे। क्योंकि इस नाशवान स्वभाव को अविनाशी रूप में पहनना होगा, और इस नश्वर स्वभाव को अमरता को पहनना होगा।

जब नाशवान अविनाशी को धारण कर लेता है और नश्वर अमरता को धारण कर लेता है, तब वह कहावत पूरी होगी जो लिखी गई है: मृत्यु विजय में निगल ली जाती है। इसलिए, वर्तमान काल का शरीर जो धीरे-धीरे बूढ़ा होता जाता है और घिसता जाता है, जब हम मरते हैं तो उसे उतार कर मोड़ दिया जाता है। मसीह की वापसी और विश्वासियों के पुनरुत्थान पर, हमें अपने नए शरीर प्राप्त होते हैं, और हम उस समय कह सकते हैं कि हमारा उद्धार पूरा हो गया है।

तो, आप पाते हैं कि पौलुस हमारे शरीर के बारे में बात कर रहा है, मृत्यु के सामने आत्मविश्वास के बारे में बात कर रहा है। आयत 2 से 4 एक साथ हैं, और आयत 4 वास्तव में आयत 2 का विस्तार करती है जबकि आयत 3 एक तरह का कोष्ठक है। आप देखिए, पौलुस के पुनरुत्थान शरीर के अपने भविष्य के आरोप के आश्वासन का एक कारण मसीह के शरीर के मंदिर का उठना था, जिसका संकेत हाथों से नहीं बनाए गए वाक्यांश से मिलता है।

और वह क्या कहता है? वह पद 4 में कहता है, क्योंकि जब तक हम इस तम्बू में हैं, हम अपने बोझ के नीचे कराहते हैं। हम कराहते हैं। यह अंश कराहने की सटीक प्रकृति को परिभाषित नहीं करता है, लेकिन रोमियों 8, 19 से 23 और फिलिप्पियों 3, 20 से 21 में तात्कालिक संदर्भ और पौलुस के विचार से पता चलता है कि यह नश्वर अस्तित्व की सीमाओं और अक्षमताओं के साथ उसकी हताशा की भावना थी, क्योंकि वह जानता था कि उसे एक आध्यात्मिक शरीर प्राप्त करना था जो स्वर्ग की पारिस्थितिकी के लिए पूरी तरह से अनुकूल था।

इसलिए, पॉल ने मुक्ति की मांग की, वर्तमान अवतार की अपूर्णता से मुक्ति की नहीं, क्षय के बंधन से, न ही किसी भी और हर प्रकार की भौतिकता से। नहीं, ऐसा नहीं है। आखिरकार, पॉल के कारण ही ईसाई धर्मशास्त्र आध्यात्मिक शरीर के सिद्धांत का ऋणी है।

लेकिन सभी कुरिन्थियों ने मसीहियों की नियति के बारे में पॉल के दृष्टिकोण को साझा नहीं किया। कुछ ऐसे भी थे जो सोचते थे कि पुनरुत्थान अतीत की बात है, आध्यात्मिक रूप से पहले ही पूरा हो चुका है और मसीह के पुनरुत्थान पर सभी विश्वासियों के लिए सामूहिक है। इसलिए इन लोगों को ध्यान में रखते हुए जिन्हें हम प्रोटो- ग्रीस्टिक्स कहते हैं, आप जानते हैं, वे ग्रीस्टिक्स जो ज्ञान और उस सब में विश्वास करते हैं, जो द्वैतवादी थे, जिन्होंने भविष्य में किसी भी शारीरिक पुनरुत्थान से इनकार किया, लेकिन देह रहित अमरता की कल्पना की, पॉल उनसे कहता है, हम बिना कपड़ों के नहीं रहना चाहते, बल्कि कपड़े पहने रहना चाहते हैं, बिना किसी भारी सोच के।

बहुत, बहुत महत्वपूर्ण। आप देखिए, वर्तमान, विश्वासी का वर्तमान अस्तित्व, दुख और पीड़ा से भरा हुआ है। हम जिस वर्तमान युग में जी रहे हैं, उसकी विशेषता कराहना है।

वास्तव में, पौलुस कहता है कि सृष्टि अभी भी कराह रही है, छुटकारे की प्रतीक्षा में। हम कराहते हैं। लेकिन सुनिए, हम निराश लोगों की तरह कराहते नहीं हैं।

यह एक कराह है जिसके साथ एक लालसा भी है। और यह सिर्फ मौत की लालसा नहीं थी। पौलुस की आशा और कराह मृत्यु के लिए नहीं थी क्योंकि मृत्यु मसीही की आशा नहीं है।

दुर्भाग्य से हममें से बहुत से लोग पॉल की तरह स्वर्ग की चाहत नहीं रखते। इसके बजाय, हम दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की कोशिश कर रहे हैं, शायद एक ऐसी बेहतर जगह जहाँ से लोग आसानी से स्वर्ग पहुँच सकें। हम दुनिया को ऐसा ही बनाना चाहते हैं।

शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि हम धरती पर बहुत आरामदेह जीवन जी रहे हैं। अब, ऐसा नहीं है कि हमें दुख की तलाश करनी चाहिए, लेकिन न ही हमें अपने जीवन को आराम की तलाश में समर्पित करना चाहिए। आप जानते हैं, अमेरिकी संविधान में एक बात यह है कि हमें खुशी की तलाश में रहना चाहिए।

दुर्भाग्य से, कोई भी इसे कभी नहीं पकड़ पाता। हम खुशी की तलाश में रहते हैं, लेकिन आप मुझे बताइए, करोड़पति, अरबपति, खुशी की तलाश में इसे नहीं पकड़ पाते। इसलिए हम खुशी की तलाश में नहीं हैं, क्योंकि हमारे पास खुशी है।

खुशी और आनंद में अंतर है। खुशी की तलाश। खुशी घटनाओं से जुड़ी है।

यह आपके आस-पास की घटनाओं, घटनाओं और चीज़ों पर निर्भर करता है। लेकिन खुशी प्रभु को जानने और प्रभु को अपने अंदर रखने से आती है - हमारे अंदर असली खुशी।

शायद हम दुनिया में बहुत ज़्यादा आराम से रह रहे हैं और परिणामस्वरूप, हमें स्वर्ग पसंद नहीं है। ईमानदारी से स्वर्ग की इच्छा करने में कुछ भी ग़लत नहीं है। कुछ भी नहीं।

पॉल से सहमत होना और यह कहना कि हम बड़े हो गए हैं, कुछ हद तक सही है। पॉल, जैसा कि सभी ईसाइयों के लिए सच है, भौतिक शरीर में, प्रभु से दूर क्यों था? हम जानते हैं कि सभी कुरिन्थवासी पॉल से सहमत नहीं हैं।

वह हमें पद 5 में बताता है, उसने कहा, इसी उद्देश्य के लिए, इसी उद्देश्य के लिए, जिसके लिए परमेश्वर ने बेहतर बनाया है, परमेश्वर के साथ तैयार है। आस्तिक को पद 4 में नश्वर शरीर के परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया गया है। इसलिए, पद 5बी हमें बताता है कि यह कैसे होने जा रहा है।

जब हम पद 5बी कहते हैं, तो हमारा मतलब पद 5 के उत्तरार्द्ध से है। यह दर्शाता है कि तैयारी कैसे हुई। परमेश्वर ने हमें प्रतिज्ञा और जमा के रूप में आत्मा देकर ईसाई विश्वासी को पुनरुत्थान और परिवर्तन के लिए तैयार किया है। निस्संदेह, इस पद में महत्वपूर्ण शब्द प्रतिज्ञा, अरबन है, जिसके वाणिज्यिक उपयोग में दो बुनियादी अर्थ थे।

नंबर एक, इसका मतलब है प्रतिज्ञा या गारंटी, जो अंतिम भुगतान से अलग है, लेकिन यह इसे अनिवार्य बनाता है। आप जानते हैं, कभी-कभी आप एक घर खरीदना चाहते हैं, या आप कुछ खरीदना चाहते हैं, और फिर वे आपको बयाना राशि लाने के लिए कहते हैं, जो कार्बन है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप वास्तव में इसे खरीदने में रुचि रखते हैं, और वे आपको बताते हैं कि यह वापसी योग्य नहीं है। इसलिए यदि आपने हजारों डॉलर जमा किए हैं और यह वापसी

योग्य नहीं है, तो आपको इसे जमा करने से पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आप वास्तव में इसे चाहते हैं।

लेकिन पॉल यहाँ बिल्कुल यही इस्तेमाल कर रहा है, अरबन , एक गारंटी, जिसका मतलब है कि अंतिम भुगतान अनिवार्य हो जाता है, या इसका मतलब है आंशिक भुगतान, पहला दफ़्तर, जिसके लिए आगे के भुगतान की आवश्यकता होती है लेकिन आपको, भुगतानकर्ता को, संबंधित सामान पर कानूनी दावा देता है। आप देखिए, तो पॉल कहते हैं कि भगवान ने हमें एक प्रतिज्ञा दी है, लेकिन सवाल यह है कि आत्मा ईसाई की विरासत के लिए भगवान की प्रतिज्ञा कैसे हो सकती है? आप देखिए, इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे दैनिक मनोरंजन को सशक्त बनाने और हमारे पुनरुत्थान के भविष्य के प्रभाव के माध्यम से ही हम में काम हो रहा है। पवित्र आत्मा का वर्तमान कार्य भविष्य में भगवान के कार्य के पूरा होने की पूर्वसूचना और गारंटी देता है।

इसलिए, छंद छह से आठ में, पौलुस महिमामय शरीर के अपने आरोप की आश्वस्त आशा के साथ आगे बढ़ता है, और आत्मा की उपस्थिति और गतिविधि में उस परिवर्तन की प्रतिज्ञा होने के कारण, वह उस आश्वस्त आशा के साथ आश्वस्त था। क्योंकि हम महसूस करते हैं कि जब तक यह शरीर हमारा निवास स्थान है, तब तक हम प्रभु की उपस्थिति से अनुपस्थित हैं, इसलिए यह हमारी प्राथमिकता है कि हम इस शरीर में अपना घर छोड़ दें और प्रभु की उपस्थिति में निवास करें।

याद रखें, फिलिप्पियों के अध्याय एक में उन्होंने कहा था, मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ, और मैं विदा भी लेना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, लेकिन ठीक है, मुझे लगता है कि यह अच्छा है कि मैं तुम्हारे साथ रहूँ। उन्होंने कहा, क्योंकि मेरे लिए जीना मसीह है, और मरना लाभ है।

मैं दो के बीच में फंस गया था। हाँ, पॉल कहता है, हाँ, हम बड़े हो गए हैं। हम अपना वर्तमान निवास छोड़कर प्रभु की उपस्थिति में निवास करना चाहते हैं।

लेकिन अभी वह समय नहीं आया है। शरीर में निवास करना प्रभु की अनुपस्थिति है। यही बात पद छह में निहित है और यही बात अब पद आठ में स्पष्ट रूप से पौलुस ने कही है।

पद्य छः: हम हमेशा आश्वस्त रहते हैं, भले ही हम जानते हैं कि जब हम शरीर में होते हैं, शरीर में घर पर होते हैं, तो हम प्रभु से दूर होते हैं, लेकिन हम विश्वास से चलते हैं। अब, सुनिए, पद्य सात एक ऐसा अंश है जिसे हम नियमित रूप से उद्धृत करते हैं। हम विश्वास से चलते हैं, हम दृष्टि से नहीं चलते।

अब, पद सात को पद छह की संभावित गलत व्याख्या को सही करने के लिए माना जाता है। यदि हम प्रभु से दूर हैं, इस खंड की व्याख्या पूर्ण अर्थ में की जाती है, तो मसीह के साथ वर्तमान संगति भ्रामक प्रतीत होगी, और तब इसका अर्थ होगा कि नश्वर देहधारण आध्यात्मिकता के लिए एक बाधा है। इसलिए, 2 कुरिन्थियों अध्याय पाँच में जो हम पढ़ते हैं, वह वास्तव में एक सुधार है।

इसलिए, ऐसी कटौती नहीं की जानी चाहिए। इसलिए, पॉल कहते हैं, हम वास्तव में अभी भी विश्वास के दायरे में चलते हैं, न कि दृष्टि के दायरे में। इसलिए, विश्वासी के लिए, प्रभु दृष्टि के लिए नहीं, बल्कि विश्वास के लिए मौजूद है।

प्रभु के साथ हमारा कोई भी विशेष अलगाव अस्थायी है, यह अंतिम नहीं है। पौलुस यहीं बात कर रहा है। फिर, वह नौवें पद में कहता है कि चाहे हम घर पर हों या बाहर, हमें उसे प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

नौवाँ पद मूलतः एक से आठवें पद का अनुसरण करता है, ठीक उसी तरह जैसे कि नैतिक आदेश। इससे हमारा क्या मतलब है? आप देखिए, पॉल आमतौर पर कुछ शिक्षाएँ देते हैं, और फिर वह कुछ आदेश देते हैं और कहते हैं, इसके प्रकाश में, मैंने जो कहा है उसके प्रकाश में, आपको इस तरह से जीना चाहिए। यह एक नैतिक आदेश है।

तो, अब वह कह रहा है कि, मैंने अभी जो कहा है, उसके प्रकाश में, प्रभु से दूर रहना और फिर उनसे मिलने का इंतज़ार करना, उसके प्रकाश में, आपको इस तरह से जीना होगा और उसे प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बनाना होगा। तो, पद एक से आठ में उन सैद्धांतिक सत्यों को बताने के बाद, पौलुस अब पद नौ में निहितार्थ दिखाना शुरू करता है। यह, जो अभी कहा गया है उसका निहितार्थ, निरंतर महत्वाकांक्षा है मसीह को प्रसन्न करना।

मसीह को प्रसन्न करना। उसकी यह जागरूकता कि मृत्यु मसीह से उसके सापेक्ष निर्वासन को समाप्त कर देगी और प्रभु की उपस्थिति में दृष्टि के क्षेत्र में उसके चलने का उद्घाटन करेगी, यह मांग करती है कि उसे उसे प्रसन्न करना चाहिए। इसलिए, मृत्यु के बाद मसीह के साथ व्यक्तिगत रूप से संवाद की आशा करना स्वाभाविक रूप से मृत्यु से पहले और बाद में उसकी आँखों में स्वीकृति प्राप्त करने की आकांक्षा को प्रेरित करता है।

अब, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि हमें परमेश्वर को प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बनाना चाहिए। हमारा सर्वोच्च लक्ष्य परमेश्वर को प्रसन्न करना होना चाहिए। आपको वेस्टमिंस्टर कैटेचिज़्म याद होगा, जिसमें यह सवाल पूछा गया था कि मनुष्य का मुख्य उद्देश्य क्या है? और यह कहता है कि मनुष्य का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना और हमेशा उसका आनंद लेना है।

यदि आप हमेशा के लिए उसका आनंद लेना चाहते हैं, तो आपको इस दुनिया में, अपने नश्वर अस्तित्व में उसका महिमामंडन करना होगा। हमें उसे प्रसन्न करना, उसके साथ चलना अपना लक्ष्य बनाना होगा और इसे हर दिन अपना लक्ष्य बनाना होगा। क्या आपको कुछ एहसास है? अब, जब आप किसी से सच्चा प्यार करते हैं, तो आप उस व्यक्ति को नाराज़ नहीं करना चाहते।

जब आप किसी से सच में प्यार करते हैं, तो आप यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आप उस व्यक्ति को नाराज़ न करें। और यह महत्वपूर्ण है। आप उस व्यक्ति को नाराज़ करने से लगभग डरते हैं, क्योंकि आप उस रिश्ते को बहुत महत्व देते हैं, और आप नहीं चाहते कि कोई भी चीज़ उस रिश्ते को बर्बाद करे।

यह वही बात है। हम प्रभु को प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बनाते हैं। प्रचार करते समय, हम प्रभु को प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बनाते हैं।

जीवन में हम प्रभु को प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बनाते हैं। हमारे जीवन का हर पहलू हमारी इच्छा, हमारा लक्ष्य और हमारी लालसा होनी चाहिए, और मैं बस आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। और आप जानते हैं, कभी-कभी इसका मतलब है कि आपको किसी को नाराज़ करना होगा।

ऐसा नहीं है कि आप किसी को नाराज़ करने की तलाश में हैं, लेकिन स्वाभाविक रूप से, ऐसा इसलिए होता है क्योंकि किसी का मूल्य परमेश्वर के मूल्यों से पूरी तरह अलग हो सकता है, और उस बिंदु पर, आपको चुनाव करना होगा। उन्होंने कहा कि हम प्रभु को प्रसन्न करना अपना लक्ष्य बनाते हैं। फिर वे कहते हैं कि हम सभी को मसीह की न्यायपीठ के सामने उपस्थित होना चाहिए।

यहाँ मसीह की न्यायपीठ मूल रूप से बेमा सीट का वर्णन करती है। वह सीट जहाँ लोगों को पुरस्कार दिए जाते हैं, पुरस्कार दिया जाता है, क्योंकि हम शरीर में जो कुछ भी करते हैं उसका नैतिक महत्व होता है और उसके अनंत परिणाम होते हैं। अगले जीवन में मसीह के शानदार शरीर के अनुरूप होने के लिए, हमें इस जीवन में उनकी छवि और चरित्र के अनुरूप होना चाहिए।

वह प्राप्त करने, मसीह की न्यायपीठ के समक्ष उपस्थित होने, तथा यह अपेक्षा करने के बारे में बात करता है कि हम ऐसा जीवन जियें जो उसे प्रसन्न करे। और याद रखें, हमने कहा, यह बेमा की सीट है जहाँ लोग अपने पुरस्कार प्राप्त करते हैं। उस समय, यह हमारा उद्धार नहीं है जिसकी जाँच की गई है, बिल्कुल नहीं।

भगवान हमें पुरस्कृत करेंगे। वह हमारे द्वारा किए गए कामों को देखेंगे, चाहे वे अच्छे हों या बुरे। अब, यह अच्छा या बुरा होना चाहिए।

जैसा कि हम जानते हैं, बुरी चीजें हैं, लेकिन वे बेकार हैं। चाहे वे बेकार हों या वे महत्वपूर्ण हों या महत्वहीन। आप समझ रहे हैं कि हमारा क्या मतलब है? कई लोगों को खुश करने वालों के विपरीत, पौलुस के लिए, प्रभु यीशु मसीह को खुश करने से ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ नहीं था, जिसने उसे नियुक्त किया था।

इसका मतलब यह है कि जब पतरस गलत होता है, तब भी वह उसका सामना करने में सक्षम है और कहता है, पतरस, तुम इस स्तर पर गलत हो। मेरा मतलब है, हम इसे गलातियों में देखते हैं। वह उससे कहने में सक्षम है, नहीं, हाँ, मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे पहले एक प्रेरित हो।

उन्होंने इसे बिल्कुल वैसा नहीं कहा, लेकिन अगर आप बातचीत में मौजूद होते, तो वे कहते, हाँ, मुझे पता है कि आप प्रभु के साथ हैं, लेकिन इस समय, आप यह गलत कर रहे हैं। वह प्रचार करने, यरूशलेम चर्च को खुश करने पर अड़े नहीं थे, बिल्कुल भी नहीं। हालाँकि पॉल पूरी तरह से कुरिन्थियों द्वारा सम्मानित होने की आशा से रहित नहीं है, लेकिन सुसमाचार की उनकी घोषणा और उनका पूरा जीवन लोगों से सम्मान और प्रशंसा जीतने के बजाय प्रभु को प्रसन्न करने के लिए समर्पित था।

आप जानते हैं, आजकल लोग प्रशंसा सुनना पसंद करते हैं। सेवा के बाद, उपदेशक इंतज़ार कर रहा होता है कि लोग कहें, यह एक बढ़िया संदेश था। यह शानदार था।

यह बहुत बढ़िया था। अब, अगर लोग आपके पास आकर कहते हैं कि, इसके लिए भगवान का शुक्रिया, लेकिन हमें घमंडी नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें यह जानना चाहिए कि अगर महिमा भगवान की है, तो आप जानते हैं कि जब आप 1 कुरिन्थियों के अध्याय चार में पॉल की कही बात पढ़ते हैं, जब वह कहता है, तुम्हारे पास क्या है जो तुम्हें नहीं दिया गया? और अगर तुम्हें दिया गया है, तो तुम ऐसा व्यवहार क्यों करते हो जैसे कि तुम्हें नहीं दिया गया है? आइए जानें कि सेवकाई में हमें जो भी सफलताएँ मिली हैं, जो भी सफलताएँ, जो भी जीतें हमें मिली हैं, वे सब भगवान की वजह से हैं, और हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम भगवान को प्रसन्न कर रहे हैं। हमें लोगों द्वारा दिए जाने वाले सम्मान से इतना प्रभावित नहीं होना चाहिए।

क्योंकि सभी को मसीह के न्याय-आसन के सामने उपस्थित होना होगा। शरीर में रहते हुए, हमें इस तरह से कार्य करना चाहिए कि हम न्याय के समय उसे प्रसन्न करें। हम जो हैं, वही हम देखेंगे।

आप देखिए, सारे दिखावे खत्म हो जाएंगे। सारे मुखौटे उतार दिए जाएंगे। सभी विश्वासियों से सारे छद्मवेश, मुखौटे और दिखावे उतार दिए जाएंगे।

शरीर में हम जो कुछ भी करते हैं उसका नैतिक महत्व है। इसलिए, हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि हम मसीह की छवि के अनुरूप हों। हम सभी को एक साथ आना चाहिए।

इस संदर्भ में, पॉल मुख्य रूप से, यदि विशेष रूप से नहीं, तो मसीहियों के अपने बारे में लेखा देने के दायित्व के बारे में सोच रहा है। मसीह के न्यायाधिकरण के समक्ष उपस्थित होना मसीहियों का विशेषाधिकार है। यह हमारे कार्यों के मूल्यांकन से संबंधित है, बेशक, अप्रत्यक्ष रूप से हमारे चरित्र के साथ, हमारे भाग्य के निर्धारण के साथ नहीं।

यहाँ इसका सम्बन्ध पुरस्कार से है, पद से नहीं। यह अंतर करना बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। और फिर, हम पौलुस की प्रेरणा को पद 12 से 17 तक जाते हुए देखते हैं।

इसलिए, प्रभु का भय मानकर, हम दूसरों को समझाने की कोशिश करते हैं। लेकिन हम खुद परमेश्वर के सामने जाने जाते हैं, और मुझे आशा है कि हम तुम्हारे विवेक के सामने भी जाने जाते होंगे। हम फिर से तुम्हारे सामने अपनी तारीफ़ नहीं करते, बल्कि तुम्हें हमारे बारे में घमंड करने का मौका देते हैं ताकि तुम उन लोगों को जवाब दे सको जो दिल पर नहीं बल्कि दिखावे पर घमंड करते हैं।

क्योंकि यदि हम अपने आप से बाहर हैं, तो यह परमेश्वर के लिए है। यदि हम अपने सही दिमाग में हैं, तो यह तुम्हारे लिए है। क्योंकि मसीह का प्रेम हमें बाध्य करता है या हमें प्रेरित करता है क्योंकि हम आश्चर्य हैं कि एक सभी के लिए मर गया है; इसलिए, सभी मर गए हैं।

और वह सब के लिए मरा, ताकि जो जीवित हैं वे आगे को अपने लिए न जीएँ, बल्कि उसके लिए जीएँ जो उनके लिए मरा और जी उठा। इसलिए अब से हम किसी को भी मानवीय दृष्टिकोण से नहीं देखते। हालाँकि हम एक बार मसीह को मानवीय दृष्टिकोण से जानते थे, फिर भी हम उसे अब उस तरह से नहीं जानते।

इसलिए, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। सब कुछ पुराना बीत चुका है। देखो, सब कुछ नया हो गया है।

इसलिए, पद 11 से, वह प्रभु के भय के बारे में बात करना शुरू करता है। आप देखिए, पद 11 में पौलुस जिस भय की बात करता है, वह व्यक्तिगत धर्मपरायणता नहीं है और न ही वह भय है जो प्रभु लोगों के दिलों में जगाता है। वह उस श्रद्धापूर्ण भय के बारे में बात कर रहा है जो पौलुस को अपने ईश्वरीय मूल्यांकनकर्ता और न्यायाधीश के रूप में मसीह के प्रति था।

तो, हम इन आयतों, सेवा के लिए प्रेरणा को देखना शुरू कर रहे हैं। आयत 11 से 15 में, आप सेवा के लिए पौलुस की प्रेरणा को देखते हैं। एक बार फिर, ध्यान पौलुस की सेवकाई पर वापस चला जाता है क्योंकि वह सेवकाई के लिए अपनी तीसरी प्रेरणा की समीक्षा करता है।

वह पहले घोषणा की सेवकाई के बारे में बात करता है और फिर अपने प्रचार की विषय-वस्तु को और अधिक विस्तार से समझाता है। अध्याय 5, आयत 11 से 13 में, पौलुस वही दोहराता है जो उसने पहले ही 1, 12 से 14 में कहा है। वह प्रभु के भय को विश्वासयोग्य और मेहनती सेवा के आधार के रूप में देखता है।

वह कहता है, हम लोगों को समझाते हैं। अपनी व्यक्तिगत जवाबदेही से अवगत, पॉल ने कहा, हम लोगों को समझाते हैं। उन्हें किस बात के लिए समझाएँ? उन्हें किस बात के लिए मनाएँ? इसका उत्तर बहुत सरल है।

सुसमाचार की सच्चाई और खुद के बारे में सच्चाई के बारे में, यानी, उनके इरादे शुद्ध और ईमानदार थे, और उनके प्रेरितिक प्रमाण-पत्र और सुसमाचार की सच्चाई की रक्षा में व्याख्या और ध्यान दें कि सुसमाचार की सच्चाई की खुली बयान रक्षा में यीशु और परमेश्वर के राज्य के बारे में शास्त्रों की व्याख्या और साथ ही सुसमाचार के व्यावहारिक निहितार्थों के बारे में विवाद दोनों शामिल हैं। यह जानते हुए कि परमेश्वर का भय, वह प्रभु के भय को वफ़ादार और मेहनती सेवा के आधार के रूप में देखता है। ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति सबसे ज़्यादा उस व्यक्ति की सेवा करता है जिससे वह सबसे ज़्यादा डरता है।

व्यक्ति उसी की सबसे अधिक सेवा करता है जिससे वह सबसे अधिक डरता है। यह कोई गुलामी वाला डर नहीं है। पॉल जिस डर की बात कर रहे हैं, वह आत्मनिर्भरता को बाहर करता है।

इसलिए, पौलुस व्यर्थ में अपनी बुद्धि और तुच्छ संसाधनों पर भरोसा करने की कोशिश नहीं करता। आप देखिए, पौलुस के कुछ आलोचकों ने उस पर खुद से बाहर होने का आरोप लगाया होगा। इसलिए, पद 13 में कहा गया है, क्योंकि अगर हम खुद से बाहर हैं, तो यह परमेश्वर के लिए है।

अगर हम सही सोच में हैं, तो यह आपके लिए है। आप जानते हैं, आज हम ऐसे समाज में रहते हैं जो न केवल ईसाइयों पर संदेह करता है बल्कि अक्सर यह भी सोचता है कि ईसाई कम से कम थोड़े पागल तो हैं ही। हम ऐसे ही समाज में रहते हैं।

समाज न केवल ईसाइयों पर संदेह करता है, बल्कि कभी-कभी उन्हें लगता है कि हम थोड़े पागल हैं क्योंकि हम यह मानते हैं कि कोई मर गया और जी उठा, कोई आपके पापों के लिए मर गया और मृतकों में से जी उठा और वापस आ रहा है, और वे कहते हैं, क्या तुम अपना विवेक खो चुके हो? खैर, यही तो उन्होंने सोचा था। हालाँकि, हम पॉल की तरह कह सकते हैं कि मसीह ने हमारे लिए प्यार किया और साथ ही मसीह के लिए हमारा प्यार भी। आप देखिए कि इस आयत में, ग्रीक अपने जननात्मक का उपयोग करते हैं, यह कह सकते हैं कि यह मसीह के लिए हमारे लिए प्यार या मसीह के लिए हमारा प्यार हो सकता है।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि पॉल वहाँ कोई निर्णय लेने का इरादा रखता है। हम मसीह के लिए अपने प्रेम को कह सकते हैं। अगर हम मसीह से उतना ही प्रेम करते हैं जितना मसीह ने हमसे किया, तो मसीह के लिए जीना दूसरों के लिए जीना है।

यह हमें बाध्य करता है। इसलिए, मसीह का हमारे प्रति प्रेम और मसीह के प्रति हमारा प्रेम दोनों ही हमें प्रेरित करते हैं। और वह कहते हैं, चाहे हम खुद से बाहर हों, आप सोचते हैं कि हम पागल हैं, आप सोचते हैं कि हम पागल हैं।

उन्होंने कहा कि यह आप सभी के लिए है। मसीह का प्रेम हमें घेरता है, हमें विवश करता है, और हमें खींचता है क्योंकि हम आश्चर्य हैं कि एक व्यक्ति सभी के लिए मरा है। और फिर, पद 15 में, वह सभी के लिए मरा ताकि जो जीवित हैं वे अब अपने लिए नहीं, बल्कि उसके लिए जी सकें जो उनके लिए मरा और जी उठा।

इसके अलावा, पौलुस और आज के विश्वासियों के लिए, हमारे विश्वास मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में निहित हैं। इसलिए, पौलुस जो करता है वह यह है कि वह आयत 4 से 15 में जो कुछ कहता है उसके झूठे परिणाम को उजागर करता है। वह अब मानवीय मानकों के आधार पर चीजों का न्याय या मूल्यांकन नहीं करता।

चीजों को देखने का उनका नज़रिया पूरी तरह बदल गया है। मैं अब चीजों को मानवीय मानकों के हिसाब से नहीं आंकता। मैं चीजों को इस आधार पर आंकता हूँ कि परमेश्वर उनके बारे में क्या सोचता है।

आप देखिए, अपने धर्म परिवर्तन से पहले, पॉल का मसीहा के रूप में मसीह के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण था। आज भी बहुत से लोग ऐसा ही सोचते हैं। मसीह को मानवीय दृष्टिकोण से आंकना विभिन्न रूपों में जारी है, समाज में और अकादमी में भी।

लेकिन कुछ निर्णय मसीह के दिनों के फरीसियों के निर्णय की तरह ही गलत हैं, जिन्होंने उन्हें एक बढ़ई के बेटे या एक भ्रमित भविष्यवक्ता से ज़्यादा कुछ नहीं समझा। और कुछ लोग अभी

भी उन्हें उसी तरह देखते हैं। मसीह के अलावा, लोगों का मूल्यांकन मानवीय मानकों के आधार पर भी किया जाता है।

आज, लोगों के साथ दुनिया के उस क्षेत्र के आधार पर व्यवहार किया जाता है, जहाँ से वे आते हैं, राष्ट्रीयता, जातीयता, शैक्षिक स्तर, धन, इत्यादि। और दुख की बात है कि, बेशक, चर्च भी इससे अछूता नहीं है, यह कहना दुखद है। ऐसे मानक, मेल-मिलाप को बढ़ावा देने के बजाय, केवल संघर्ष और विभाजन को बढ़ावा देते हैं।

ईसाइयों को सभी सतही मानवीय मानकों से दूर रहना चाहिए। हम लोगों का मूल्यांकन इस आधार पर नहीं करते कि उनके पास क्या है, वे कहाँ से आए हैं, या वे क्या जानते हैं। लेकिन मुख्य मूल्यांकन यह है कि क्या ये लोग विश्वासी हैं? ईसाई होना और सुनना केवल हाथ उठाकर प्रभु को स्वीकार करने से कहीं अधिक है, उद्धार में, जीवन में इसके अनुरूप परिवर्तन किए बिना।

यह दूसरा परिणाम है। दूसरा परिणाम पद 17 में लिखा है: यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। पुराना चला गया है, और नया आ गया है।

मसीह के साथ एकता के परिणामस्वरूप एक परिवर्तन लाया जाता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि यीशु कोई नया धर्म नहीं बल्कि एक नई सृष्टि लेकर आए थे। यीशु कोई नया धर्म लाने नहीं आए थे।

यह एक नई रचना है। देखिए, अगर आप चार्ल्स डिकेंस की कहानी, ए क्रिसमस कार्ड पढ़ते हैं, तो आप एबेनेज़र स्कूज की कहानी पढ़ते हैं, जो झुर्रीदार, सनकी, कड़वा, लालची बूढ़ा आदमी है। क्रिसमस की पूर्व संध्या पर उसे एक सपने में मौत का सामना करना पड़ा।

उसका दिवंगत साथी, जैकब मार्ले, उसे अपनी गाड़ी में घसीटता हुआ आता है और स्कूज को बताता है कि उसकी मृत्यु निश्चित है और वह जीवन भर उसके सामने मंडराता रहेगा। मार्ले ने घृणा, लालच और अधर्म के माध्यम से अपनी जंजीर में हर कड़ी को जोड़ने का काम किया था। इसलिए, स्कूज क्रिसमस के अतीत, वर्तमान और भविष्य की यात्रा पर जा रहा था, और उसने एक कब्र के पत्थर पर अपना नाम खुदा हुआ देखा।

मौत की भयावह निकटता ने आखिरकार उसे बदल दिया। क्रिसमस की सुबह वह एक अलग इंसान के रूप में उठा। आप देखिए, जब स्कूज अगले दिन उठा, तो उसे सब कुछ अलग लगा।

मौसम, रोशनी, लोग, उसके रिश्ते, और उसके कदमों की हलकी चाल, सब कुछ सचमुच। अपनी आसन्न मृत्यु और अलग होने की संभावना के बारे में जागरूकता के कारण, उसने जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण को नया और महत्वपूर्ण बना दिया था। डिकेंस ने अपनी कहानी में सुसमाचार का कोई उल्लेख नहीं किया है, लेकिन यह इस बात का एक अच्छा चित्रण प्रस्तुत करता है कि जब हम यीशु की मृत्यु पर विचार करते हैं तो हमारे अंदर क्या घटित होता है, और हम वास्तव में देखते हैं कि यह क्या है।

जब हम जानते हैं कि यीशु की मृत्यु का क्या अर्थ है, यदि कोई मसीह में है और हम जानते हैं कि क्या किया गया है, तो एक परिवर्तन होता है। जब, विश्वास के द्वारा, हम क्रूस पर यीशु की मृत्यु और कब्र से उनके पुनरुत्थान में प्रवेश करते हैं, तो हमारे पास एक नया जीवन होता है; हम एक नई रचना बन जाते हैं, और हमारे लिए सब कुछ बदल जाता है। बहुत अधिक गहन अर्थ में, क्रूस पर मसीह की मृत्यु हममें से प्रत्येक को एक नई रचना बनाती है।

हम बिल्कुल नए हैं, और जॉन बन्धन की पिलग्रिम्स प्रोग्रेस में तीर्थयात्री की तरह, जो अतीत में हमें जकड़े रखने वाले सभी बोझ से मुक्त है, पॉल पुनर्जन्म के बारे में बात नहीं कर रहा है जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। नहीं, बिल्कुल नहीं। यही सबसे अच्छी बात है जिसकी गैर-ईसाई उम्मीद कर सकते हैं।

दुर्भाग्य से, ऐसा नहीं है। ऐसे लोग हैं जिन्हें इस जीवन में एक और मौका मिलता है, लेकिन क्या कोई बेहतर करने की उम्मीद कर सकता है? अगर एक और मौका दिया जाता है, तो इतना निश्चित नहीं है। शायद हम दूसरी बार भी उतने ही बुरे हालात में होंगे।

पौलुस एक नई सृष्टि के बारे में बात कर रहा है, एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर की उपस्थिति से भरा हुआ है, एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर की शक्ति से परिवर्तित होता है, मेमे के लहू से धुलता और शुद्ध होता है। वह पद 18 में आगे कहता है कि यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के द्वारा हमें अपने साथ मिला लिया है और हमें मेल-मिलाप की सेवकाई सौंपी है। मेरे भाई और मेरी बहन ने इसे सुना।

कोई ट्रांस नहीं हो सकता, और व्यक्ति के हृदय में परिवर्तन के अलावा कोई मेल-मिलाप नहीं हो सकता। हृदय परिवर्तन, जीवन परिवर्तन होना चाहिए। परिवर्तन, परिवर्तन ही मेल-मिलाप का मार्ग है क्योंकि जब हम जाति और लिंग और इन सब के आधार पर विभाजित होते हैं, तो यह घृणा है, और यह पाप है।

और अब, मेरा मतलब है, अगर हम नस्लवाद से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो हमें हृदय परिवर्तन से शुरुआत करनी होगी क्योंकि नस्लवाद एक पाप है और नफरत पर आधारित है, चाहे वह कुछ भी हो। यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के माध्यम से हमें अपने साथ मिला लिया है और हमें मेल-मिलाप की सेवकाई दी है। आज विश्वासियों के रूप में यही हमारी जिम्मेदारी है।

अर्थात्, मसीह में परमेश्वर संसार को अपने साथ मिला रहा था, उनके अपराधों को उनके विरुद्ध नहीं गिना और मेल-मिलाप का संदेश हमें सौंप रहा था। जब पौलुस यह सब कहता है, तो वह आयत 14 से 17 में क्या हैं, विशेष रूप से आयत 14 से 15 में मसीह के छुटकारे के कार्य के बारे में बात कर रहा है। परमेश्वर ने पौलुस और दूसरों को अपने साथ मिला लिया।

यह ऐसा कुछ नहीं था जो वे खुद कर सकते थे। परमेश्वर ने मसीह में एक निर्णायक कदम उठाया ताकि अपने और मानवता के बीच की खाई को पाट सकें। सभी लोग परमेश्वर से अलग हो गए थे, सभी लोग परमेश्वर से अलग हो गए थे, लेकिन परमेश्वर अपनी दया में, परमेश्वर अपनी कृपा में, अब लोगों को अपने साथ मिला रहा है।

और फिर वह कहता है कि उसने हमें राजदूत बनाया है। सुनिए, पद 19 सुसमाचार का हृदयस्थल है। सबसे पहले, पहल परमेश्वर के हाथ में थी।

उसने हमारे पाप और विद्रोह द्वारा पैदा की गई अलगाव की खाई को पाट दिया। दूसरा, मध्यस्थ मसीह था। सुलह का केन्द्र कलवरी में मसीह की मृत्यु है जिसके माध्यम से मसीह हमारे लिए पुल के रूप में खड़ा था।

तीसरा, मसीह की मृत्यु के परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने मेल-मिलाप का मार्ग खोल दिया है। परमेश्वर ने अब मेल-मिलाप का संदेश और सेवकाई हमें विश्वासियों के रूप में सौंप दी है। और सुनिए, वह हमें राजदूत कहता है।

हम मसीह के राजदूत हैं। आप जानते हैं, एक राजदूत के रूप में, यदि आप राजनयिक सेवा में हैं, तो आप अपना संदेश नहीं देते हैं। आप अपनी घरेलू सरकार का संदेश देते हैं।

आप एक राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। और इसलिए, आपका हर वाक्य महत्वपूर्ण है। हर उपस्थिति की जांच की जाती है।

आपके हर कदम पर बहुत बारीकी से नज़र रखी जाती है क्योंकि आप एक राजदूत हैं। आप कोई बयान देते हैं और लोग उस पर ध्यान देते हैं। उन्हें लगता है कि आप राज्य सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और वे इसे सच मान लेते हैं।

अब समझिए कि हम मसीह के राजदूत हैं। हम मसीह के राजदूत हैं, और चूँकि हम मसीह के राजदूत हैं, इसलिए हमें उनका प्रतिनिधित्व करना चाहिए। यह मुझे एक कहानी की याद दिलाता है।

मैं अभी देश का नाम नहीं बताऊंगा, लेकिन मैं आपको एक खास देश के एक खास राष्ट्रपति की कहानी बताऊंगा। यह एक सच्ची कहानी है। उनका एक बहुत अच्छा दोस्त था जिसने उनकी राजनीति और बाकी सब चीजों का खर्च उठाया था।

तो, वह उसके पास गया। वह कोई विद्वान आदमी नहीं था, लेकिन वह बहुत अमीर था। वह शिक्षित नहीं था, लेकिन वह बहुत अमीर था।

इसलिए, उन्होंने उस राष्ट्रपति के चुनाव को वित्तपोषित किया, और फिर एक दिन उन्होंने सोचा, उन्होंने कहा, मैं बनना चाहता हूँ, उन्होंने कहा, मुझे सरकार में एक पद चाहिए। इसलिए, वे राष्ट्रपति के पास गए। मैंने उनका पहला नाम पुकारा।

उन्होंने कहा, विलियम, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे नियुक्त करें। मैं चाहता हूँ कि आप मुझ पर एक एहसान करें। और राष्ट्रपति ने पूछा, आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि वे राजदूत के रूप में नियुक्त होना चाहते हैं, लेकिन उन्होंने कहा, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे जर्मनी में अपनी शर्मिंदगी के रूप में नियुक्त करें।

यह कहने के बजाय कि, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे जर्मनी में अपना राजदूत नियुक्त करें, उन्होंने कहा, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे जर्मनी में अपनी शर्मिंदगी के रूप में नियुक्त करें, और राष्ट्रपति ने उनसे कहा, आपको जर्मनी जाने की ज़रूरत नहीं है। आप यहाँ पहले से ही मेरी शर्मिंदगी हैं। मैं एक सवाल पूछ रहा हूँ।

क्या हम मसीह के लिए शर्मिंदगी हैं, या हम मसीह के राजदूत हैं? सुसमाचार के सेवकों के रूप में, क्या हम उस व्यक्ति के लिए शर्मिंदगी हैं जिसने हमें बुलाया है या हम उसके राजदूत हैं? क्या हम मसीह के बारे में एक ईमानदार प्रतिनिधित्व दे रहे हैं? राजदूतों के रूप में, हमारे पास एक बड़ी जिम्मेदारी है, एक गंभीर जिम्मेदारी। हमारा संदेश क्या है? हमारा संदेश है कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करें। परमेश्वर मेल-मिलाप की पेशकश करता है, लेकिन इसे उन लोगों द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए जिन्हें यह पेश किया जाता है।

फिर, पौलुस मसीह की मृत्यु और उसके लक्ष्य का जिक्र करके अध्याय का समापन करता है। वह क्या कहता है? उसने कहा कि उसने हमारे लिए पापबलि चढ़ाई है। इसलिए, हम मसीह के राजदूत हैं।

फिर, आयत 21 में, उसने हमारे लिए उसे प्रकट किया जो पाप से अनजान था ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। उसने उसे हमारे लिए पाप बना दिया। अब, समझिए कि वह क्या कहता है।

उसने उसे हमारे लिए पाप बना दिया। यह हो सकता है, आप देखिए, जब आप हिब्रू शब्द हतात को देखते हैं, तो इसका मतलब पाप या पाप के लिए बलिदान दोनों हो सकता है। हतात या असाम की तरह, इसका मतलब पाप और पापों के लिए बलिदान दोनों हो सकता है।

ऐसा लगता है कि यहाँ पौलुस का इरादा यह कहने से ज़्यादा है कि मसीह को पापबलि बनाया गया और हाँ, मसीह के पापी बनने से कम। उसने यह नहीं कहा कि मसीह हमारे लिए पापी बन गया। आप जानते हैं, कुछ लोग हैं जो कहते हैं, ठीक है, यीशु आध्यात्मिक रूप से मर गया।

नहीं, यह गलत है। अगर यीशु आध्यात्मिक रूप से मरा, तो उसे खुद एक उद्धारक की ज़रूरत थी। उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी। मेरा मतलब है, मसीह के साथ पहचान के बारे में बात करने की कोशिश में, नहीं, बिल्कुल नहीं, लेकिन उसने उसे पाप की बलि बना दिया।

पापी के पाप के साथ पापहीन मसीह की पहचान इतनी पूर्ण थी, जिसमें उसका भयानक अपराध और परमेश्वर से अलग होने का उसका भयानक परिणाम शामिल था, कि पौलुस गहराई से कह सकता था, परमेश्वर ने उसे हमारे लिए पाप बना दिया, जैसे यीशु क्रूस पर था, और हमें बताया गया था कि पिता ने दूर देखा, पिता, और फिर वह कहता है, वह क्रूस पर रोया, पिता, पिता, तुमने मुझे क्यों त्याग दिया? क्यों? क्योंकि तुम्हारे पाप और मेरे पाप हमारे पापबलि के रूप में उस पर रखे गए थे। आप देखिए, मसीह की पापहीनता के बारे में पौलुस की घोषणा की तुलना 1 पतरस अध्याय 1 पद 22 में पतरस ने जो कहा, और इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 4, 15 और 7, 26 में

जो कहा, उससे की जा सकती है। जिस तरह परमेश्वर की धार्मिकता हमारे लिए बाहरी है, उसी तरह जिस पाप से मसीह पूरी तरह से पहचाने गए, वह उनके लिए बाहरी था।

वह पाप से अनभिज्ञ था। वह एक आदर्श बलिदान था। उसे पाप का कोई ज्ञान नहीं था जो पापपूर्ण रवैये या पापपूर्ण कार्य करने से कभी भी आ सकता था।

नहीं, आंतरिक और बाह्य दोनों ही रूप से, यीशु बेदाग थे, और हमें उनके प्रतिनिधि बनना है। और एक बार फिर, मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आप मसीह के लिए राजदूत हैं, या आप मसीह के लिए शर्मिंदगी हैं?

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 6, 2 कुरिन्थियों 5, मसीह के राजदूत हैं।